IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, January 2023
Impact Factor: 6.252

अद्वैत वेदान्त में माया का स्वरूप

मनीष प्रसाद गौतम[1], डॉ. बृजेश नाथ ओझा[2]
शोधार्थी (संस्कृत) शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[1]
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष–संस्कृत, श्रीयुत महाविद्यालय गंगेव, जिला–रीवा (म.प्र.)[2]

शोध–सारांशः

शंकराचार्य का प्रमुख सिद्धांत अद्वैतवाद या ब्रह्मवाद है; किंतु ये ब्रह्मवादी की अपेक्षा मायावाद के प्रस्थापक के रूप में विशेष रूप से जाने जाते हैं। इस प्रकार यदि मायावाद को शंकराचार्य का प्रमुख प्रतिपाद्य कहा जाय, तो अनुचित न होगा। शांकर वेदांत की प्रमुख देन माायावाद है। इसका कारण यह है कि, यों तो ब्रह्मवाद की स्थापना उपनिषदों में हो चुकी थी, किन्तु जगत् की स्थिति का निर्धारण उपनिषदों में सम्यक रूप से नहीं हो सका था। यहाँ यह कथन संगत होगा कि जगत् के स्वरूप के निश्चय के बिना अद्वैवसिद्धि कदापि संभव न थी। सैद्धांतिक पूर्णता की दृष्टि से शंकराचार्य के पूर्वकाल में जगत् की स्थिति असिद्ध ही बनी रही। आचार्य शंकर ने इस न्यूनता की पूर्ति की थी। प्रस्तुत शोध पत्र में मायावाद की स्थापना के द्वारा जगत् को मायिक कहकर एक ओर जगत् की व्यावहारिता का प्रतिषेध किया तथा दूसरी ओर पारमार्थिक दृष्टि से जगत् के मिथ्यत्व के प्रतिपादन के द्वारा अद्वैतवाद या ब्रह्मवाद की निष्पत्ति से सम्बन्धित बिन्दुओं को आलेख में विवेचित करने का प्रयास है।

मुख्यशब्दः अद्वैत वेदान्त,माया, स्वरूप, व्यावहारिता, अद्वैवसिद्धि, पारमार्थिक, ब्रह्मवाद श्वेताश्वतरोपनिषद्, ईश्वर

संदर्भ स्रोतः

[1]. इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते। (ऋ.सं. 6;18)।
[2]. दैवीह्योष गुणमयी मम माया दुरत्यथा।
[3]. प्रकृतिं स्वा मधिटम्य मम माया तरन्ति ते।। –गीता।
[4]. अनादि माययया सुप्तो यदा जीवः प्रबुद्धयते। – गौ.का. 11/20।
[5]. माङ्धातोर्ज्ञानसामान्यमर्थः। – रामेश्वर प्रसाद उपाध्याय माया स्वरूप विमर्शः प्रज्ञा। – 1970।
[6]. मीयते (निर्मीयते) जगद् यया सा माया। – वही, पृ. 192।
[7]. यद्वा मीयते (ज्ञायते) आत्मन्यधस्तं जगत् यया सा माया। – वही।
[8]. निधष्टु 3/9।
[9]. मायाभिः प्रज्ञभिः। हेइन्ड। मायिनमतिसंधानप्रज्ञायुक्तम्....। स्कन्दभन, ऋ.1/11/2।
[10]. वसंत आच्छादयत्तिं माययया स्वप्रज्ञया। –मुद्.भा.ऋ 5/63/7।
[11]. रूपं रूपं मधवा बोभवीति मायाः कृण्वानस्तवं परिस्वाम्। –ऋ.सं. 6/55/8।
[12]. परमेश्वरो मायाभिः प्रज्ञाभिः नामरूपभूतकृतामिथ्याभिमानैर्वा, न तु परमार्थतः, पुरुरूपो बहुरूप ईयते गम्यते, एकरूप एव प्रज्ञानधनः, सन् अविद्याप्रज्ञाभिः। –बृह.उ., शां.भा., 2/5/19।
[13]. रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः। –ऋ.सं. 10/127/1।
[14]. यो देवनां नामधा एक एव...। –ऋ.सं. 10/2/3।
[15]. एको देवः सर्वभूतेषु गूढ़ः....। – श्वे. 6/11।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, January 2023
Impact Factor: 6.252

[16]. नासदासीन्नो सदासीत तदानीं ....। –ऋ.सं. 10/129।

[17]. अद्वैवतेदांत में तत्व और ज्ञान : द्वितीय परिच्छे, अवद्या अथवा माया, पृ. 57, उर्मिला शर्मा।

[18]. आमेकां लोहितशुक्ल... 0।– श्वे0 4/5; इंद्रोमायाभिः पुरुरूप....0।– बृह.उ. 2/4/19।

[19]. अस्मान्मायी सृजेत् विश्वमेतत्....0। –श्वे 4/9।

[20]. क्षरं प्रधानम्.....। संयुक्तमेतत् क्षरमक्षरं च। –श्वे 1/10 (पहला) वही 1/8। (दूसरा)।

[21]. अनिश्चिता यथा रज्जुन्धकारो विकल्पिता। सर्पधारादिभिर्भावैस्तद्वदात्मा विकल्पितः।।

[22]. प्राणादिभिरनन्तैश्च भावैरेतैर्विकल्पितः। मायैषा तस्य देवस्य यया सम्मोहितः स्वपम्।। – मा.का. 2/17,19।

[23]. मायेयं स्वानषद् भ्रान्तिर्मिथ्यारचितचक्रिका। मनोराज्यभिवालोलसलिलावर्त्तसुंदरी। –यो.वा. 4/47/41।

[24]. संसारबीजकणिका यैषाऽविद्या रधूद्वह। एषा ह्यविद्यमानैव सतीव स्फरतां गता न क्वचित् संस्थितापीह सर्वत्रैवोपलक्ष्यते। – स्यो.वा. 3/113/17,

[25]. इयं दुश्यभरभ्रांतिर्नन्वविद्येति चोच्यते। वस्तुतो विद्यते नैषा तापदद्यां यथा पयः। –वही 6/2/52/5।

[26]. मनोराज्यमिवाकारभासुरा सत्यवर्जिता। सहस्रशताशारवापि न किन्चित् परमार्थतः।। – वही, 3/113/33।

[27]. नासतो विद्यतेभावो नाभावा विद्यते सतः।

[28]. यत्तु वस्तुत एवास्ति न कदाचन किन्चन। तदभावात्म तद्राम कथं नाम विनश्यति।।– यो.वा. 6/2/3/11–12।

[29]. अविद्यात्मिका हि बीज शक्तिरव्यक्त ... ओतश्च प्रोतश्च। – बृह.उ. 3/8/4, क्वचिदक्षरशब्दोदितम् अक्षरात्परतः परः (यु.उ. 2/1/2)..... मायातु प्रकृतिं विद्यात् (श्वे 4/10) अव्यक्ता हि सा माया तत्वान्यत्वनिरूपणस्य अशक्यत्वात्।। – ब्र.शां.भा. 1/4/3, पृ. 288।